शिव अवतरण

महाशिवरात्रि विशेषांक

ओम शान्ति मीडिया

परमात्मा का अवतरण भारत में...।

आर्यावर्त भारत देश का सर्वप्रथम सम्बोधन है, जिसका अर्थ है जहां श्रेष्ठ लोगों का निवास हो। अब ऐसे युग में जहां कलियुग नहीं करयुग का जमाना है, वहां श्रेष्ठ मानव की कल्पना भी नहीं की जा सकती। चार श्रेष्ठ युग; सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर तथा कलियुग, क्रमशः स्वर्णकाल, रजतकाल, कांस्ययुग तथा लौहयुग के नाम से भी जाना जाता है। इन्हीं चार युगों की समान आयु का जोड़ एक कल्प बनता है। आज कलियुग उस गृहयुद्धों को दर्शा रहा है, जिससे महाभारत की सम्पूर्ण स्थिति हमारे सामने आ रही है। इसी स्थिति को शास्त्रगत नियमों के अनुसार - परमात्मा कहते हैं जब विश्व की ऐसी मनोदशा होगी, उसी समय वह इस सृष्टि रंगमंच पर अवतरित होकर सभी आत्माओं का शुद्धिकरण कर उसे फिर से दिव्यता प्रदान करेगा। यही वह समय है, खोलिए उन नयनों को जो उसे ढूंढ़ रही हैं, क्योंकि वह आ चुके हैं भारत में।

शान्ति की तलाश में अनेक प्रयास करने के बावजूद भी मनुष्य न ही शान्ति और न ही सुख को प्राप्त कर सका। विश्व शान्ति की स्थापना का कार्य परमपिता परमात्मा का कर्तव्य है। वे ही शान्ति की स्थापना करते हैं। जब वो आते हैं तो करोड़ों में से कोई ही उसे जानते व पहचानते हैं। परमात्मा कब, कैसे और कहाँ आते हैं ? और कैसे कर्तव्य करते हैं ? यह जानना आवश्यक है। उसीका यादगार शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। शिव के अवतरण में रात्रि का क्या है संबंध? संसार के सभी ईश्वर-विश्वासी लोग मानते हैं कि भगवान कल्याणकारी है और इसलिए इस धरा पर अवतरित होते हैं लेकिन जब वो अवतरित होते हैं तो उसको शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्राय: जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन एक परमात्मा शिव की जयन्ती ऐसी है जिसे जन्मदिन न कह शिवरात्रि के नाम से पुकारा जाता है। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका जन्म अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह लौकिक या साधारण नहीं होता है, कि उनका जन्मदिन मनाया जाए।परमपिता शिव की जयन्ती संज्ञावाचक नहीं बल्कि कर्तव्य वाचक है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त, अज्ञान निद्रा में सोये हुए मनुष्यों को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अंतिम मास होता है और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन शिव रात्रि को अज्ञान अंधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के महा परिवर्तन से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके, दु:ख और अशान्ति को हरा था वहीं से सतोप्रधान, श्रेष्ठ और मर्यादा-पुरुषोत्तम दुनिया का आरंभ हुआ था।

भगवान हमारा हो सकता है क्या? क्या वह हमारी बातें सुन सकता है? कहते हैं कि कभी न कभी, किसी न किसी समय या किसी युग में उसने हमारी बातें भी सुनी, तो सुनी बातों का एक टुक जवाब भी दिया, लेकिन हमारी आज की कलुषित मानसिकता तथा कुछ भी तुरन्त प्राप्त कर पाने की इच्छा, उस परमशक्ति को भी चमत्कारिक रूप से अनुभव करने की है। ऐसा भी हो सकता है, यदि आप सुनियोजित तरीके से उसे सुनने वा देखने का प्रयास करें।

आज मैं जो कुछ आपसे कहने जा रहा हूं, उसे अपने चर्म चक्षु से नहीं, दिव्य चक्षु से देखने का प्रयास करें।

कैसे शुरु करता है वो अपना कार्य ?

सर्वशास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित श्लोक "यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवती भारत्, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम" के अनुसार परमात्मा ने इसके यथार्थ अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि जब धर्म की अति ग्लानि, अति पापाचार-भ्रष्टाचार इस सृष्टि पर अपने चरम पर पहुंच जाता है तब मैं इस भारत देश में एक साधारण मनुष्य तन में अवतरित होता हूँ। गीता में दिए गए अपने वचन को पूरा करने के लिए परमपिता परमात्मा शिव ने कर्य शुरु किया।

प्रजापिता ब्रह्मा की हुई दिव्य रचना

1876 में कृपलानी कुल में जन्मे दादा लेखराज का नामकरण करते हुए परमपिता परमात्मा शिव ने ही उन्हें "प्रजापिता ब्रह्मा" नाम दिया। इसके बाद 1936 में सिंध हैदराबाद स्थित दादा लेखराज के तन में 60 वर्ष की उम्र में प्रवेश किया। उनके मानवीय तन के माध्यम से संसार की समस्त आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्हें पतित से पावन, मनुष्य से देवता बनाने का कठिनतम कार्य शुरू कर दिया। एक ओर नई स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना और

दूसरी ओर पतित, पुरानी दुनिया को परिवर्तन करने यानि दोनों कार्यों को सम्पन्न करने का काम साथ-साथ जारी है। अब परमपिता परमात्मा कलियुगी पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया को सतयुगी पावन, श्रेष्ठाचारी नई दुनिया में परिवर्तन करने का कार्य सम्पन्न कर वापस परमधाम लौटने की ओर अग्रसर हैं साथ-साथ सभी आत्माओं की अब रिटर्न जर्नी है।

समय की गति को पहचानो

कलियुग अभी बच्चा नहीं बल्कि इसका समय समाप्त होकर वर्तमान समय जारी पुरुषोत्तम संगमयुग का समय भी खत्म होने की दिशा में अग्रसर है। परमात्मा से सुख-शांति की ईश्वरीय विरासत (वर्सा) लेने का समय बहुत थोड़ा बचा है। अब भी इस स्वर्णिम अवसर का लाभ लेने की बजाय यदि आपने इसे गंवा दिया तो सिवाय पछताने के आपके हाथ कुछ लगने वाला नहीं है, क्योंकि विश्व परिवर्तन का महानतम कार्य अब समाप्त होने वाला है। इसके स्थान पर इस भारत देवभूमि पर सर्वोत्तम संस्कृति और सभ्यता वाला नया भारत अपना स्थान ग्रहण करने के लिए बेताब है।

परमात्मा शिव कौन?

हम मानते हैं भारत देश में तेंतीस कोटि देवी देवता हैं, परन्तु इन सभी को बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा शिव है, जिनकी अनेक धर्मों में, अनेक रूपों व अनेक नामों से पूजा की जाती है परन्तु उसका केन्द्र बिन्दु परमात्मा शिव के पास ही आकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव हैं। परमात्मा जन्म मरण से न्यारे हैं, उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अजन्मा हैं, अभोक्ता, ज्ञान के सागर हैं, प्रेम के सागर, सुख के सागर हैं, उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। परमात्मा शिव परमधाम के निवासी हैं। शिव का अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शरीरधारी नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि उनका कोई आकार नहीं बल्कि स्थूल आंखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है। परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों, पुराणों और वेदों में भी सर्वोपरी ईश्वर माना गया है।

कैसा रूप है उनका ?

विश्व के प्राय: सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। परन्तु सबसे आश्चर्यजनक एवं विरोधाभासी

तथ्य परमात्मा के सम्बन्ध में एक ही मुंह से अनेक बातें हैं। परमात्मा के सम्बन्ध में असत्य, भ्रामक और एकांगी विचारों के कारण ही समाज में हिंसा, घृणा और तृष्णा का जन्म हुआ है।

यह संसार भ्रम संसार बन गया है। इसके साथ ही सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योर्तिबिन्दु है। सोमनाथ के मन्दिर में सर्व प्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थाई रूप से मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य प्रवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृतिमें अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें हिमालय स्थित केदारनाथ, काशी में विश्वनाथ, सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

मैंने परमात्मा से सारे सम्बन्धों का रस लिया

विश्व कल्याणकारी शिव, मेरा बाबा है। भाग्यवान हैं जो भगवान हमको इतना ऊंचा पुरुषार्थ 21 जन्मों की ऊंची प्रालब्ध लेने के लिए संगमयुग पर ब्रह्मा तन में अवतरित होकर करा रहा है। मैं अकेली नहीं हूँ, भगवान मेरा साथी है। परमात्मा ने हमें हर एक सम्बन्ध का सुख दिया है। हम उसे जिस रूप में याद करते हैं वो उस रूप में हमारे साथ होता है। बाबा ने जन्म से मरने तक हमें कर्मों की गुह्यगति समझाई है। कर्म विकर्म अकर्म की गति बाबा का बनने से समझ में आई है। मुझे जीना है तो कैसे? मरना है तो कैसे? यह पक्का है। बाबा का बनने से ही जैसे शमा पर परवाना फिदा हो गया, मरजीवा जन्म है। इतने अच्छे कर्म बाबा ने सिखाये हैं, ब्रह्माबाबा कहता है शिवबाबा को याद करो और शिवबाबा कहता है ब्रह्माबाबा को फॉलो करो। अभी के हमारे कर्म 21 जन्मों के लिए राजाई दे रहे हैं। परमात्मा शिव हम बच्चों के लिए हथेली पर बहिश्त लाए हैं। अभी ही समय है पुरुषार्थ कर उस बहिश्त के अधिकारी बनने का। परमात्मा कहते हैं अभी नहीं तो कभी नहीं।

राजयोगिनी दादी जानकी,
मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

ब्रह्माकुमारी संस्था सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण करती है

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की महिमा के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूं। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत इन्सान बनाने का कार्य कर रही है।

-अन्ना हज़ारे, प्रसिद्ध समाजसेवी

कहाँ रहते हैं भगवान हमारे ?

मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मानना सबसे बड़ी भूल

परमात्मा को जहां त्रिमूर्ति (तीन देवताओं का रचयिता), त्रिनेत्री (दिव्य बुद्धि रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला), त्रिकालदर्शी (सृष्टि के आदि, मध्य तथा अन्त, तीनों कालों का ज्ञाता) आदि कहते हैं तो उसे त्रिलोकीनाथ अथवा त्रिभुवनेश्वर भी कहा जाता है। अत: तीन लोकों का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए।

मनुष्य सृष्टि

मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम रह रहे हैं, यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों की ही सृष्टि है जिसे कर्म-क्षेत्र भी कहते हैं। यहां मनुष्य जैसा कर्म करते हैं वैसा फिर भोगते भी अवश्य हैं। अत: इस सृष्टि को विराट नाटकशाला अथवा लीलाधाम, जिसमें कि सूर्य और चांद मानो बड़ी-बड़ी बत्तियां हैं, भी कहा जा सकता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन तथा कर्म तीनों ही हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र है। स्थापना, विनाश और पालना आदि परमात्मा के दिव्य कर्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं।

अव्यक्त लोक - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर पुरियां

सूर्य-चांद से भी पार इस मनुष्य लोक के आकाश तत्व के भी ऊपर एक और अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है जिसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे-लाल प्रकाश में चतुर्भुज विष्णु की पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर की पुरी है। इन तीनों देवाताओं की पुरियों को मिलाकर इसे सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं है। बल्कि सूक्ष्म, प्रकाश तत्व के हैं। इन देवताओं को अथवा इनके लोकों को, इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता, बल्कि दिव्य-चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है।

आत्माओं का निवास स्थान - परमधाम

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पांच प्राकृतिक तत्वों क्रमश: पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु रूप त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सृष्टि की

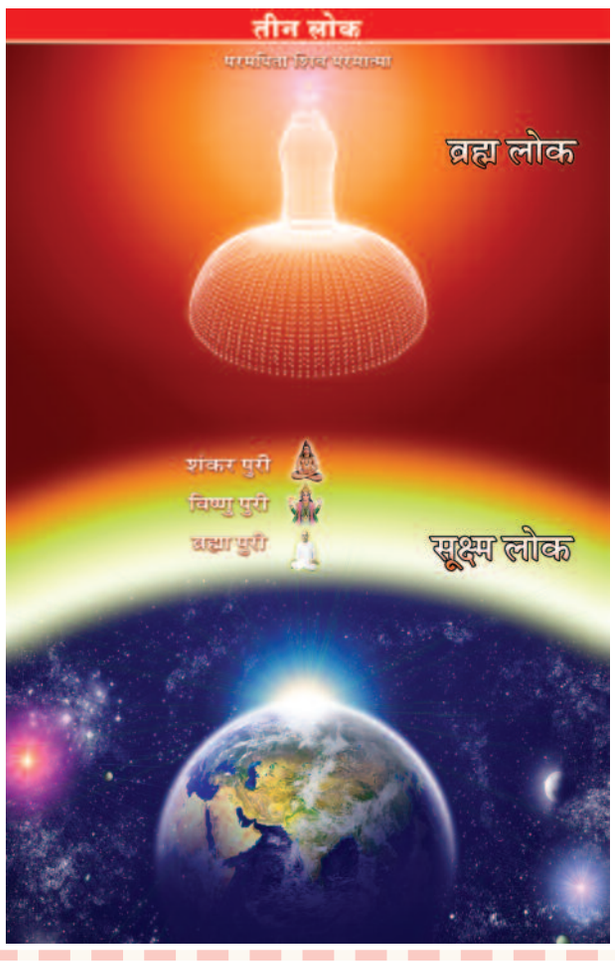

सभी आत्माएं अव्यक्त वंशावली में निवास करती हैं। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। सृष्टि-लीला की अनादि तथा निश्चित योजना के अनुसार जब किसी आत्मा का सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट होता है तभी वह नीचे साकार लोक में आकर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर अपना अभिनय करने के लिए उपस्थित होती है। प्राय: दु:ख अशान्ति के समय जब लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तो हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं।

परमात्मा शिव ही हैं ज्ञान दाता

परमात्मा शिव, सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हैं और जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त हैं। गीता में भगवान ने इस सम्बन्ध में कहा है - ''जो मुझे मनुष्यों की भांति जन्म लेने और मरने वाला समझते हैं वे मूढ़मति हैं'' (अध्याय 6, श्लोक 24, 25)। पुन: वे कहते हैं - ''मेरे दिव्य जन्म के रहस्य को न महर्षि, न देवता जानते हैं'' (अध्याय 10, श्लोक 2)। प्राय: सभी धर्मों के लोग निर्विवाद रूप से परमात्मा को 'ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप' और 'अशरीरी तथा जन्म-मरण रहित' तो स्वीकार करते ही हैं। अत: शिव का अन्य भाषान्तर 'गॉड', 'खुदा', 'ओंकार' इत्यादि है और 'शिवरात्रि' परमात्मा के दिव्य-अवतरण दिवस की यादगार है।

आत्मा-परमात्मा का महा मिलन मेला

माउण्ट आबू में समूचे विश्व में महिलाओं का सबसे बड़ा संगठन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विधालय ही एक ऐसी जगह है जहां आत्मा परमात्मा के मिलन का साक्षात महाकुंभ होता है। बात सुनने में भले ही अविश्वसनीय प्रतीत हो किंतु यह सत्य है और यह मिलन महफिल पिछले 78 वर्षों से निरंतर जारी है। ज्ञान गंगा में स्नान कर आत्माएं पावन बनकर नारी से श्रीलक्ष्मी और नर से नारायण बनने की नाव में सवार हो गये हैं। नाव का खिवैया आप सभी महान आत्माओं का पुनःआह्वान कर रहा है इस नाव में सवार होने के लिए। दुनिया के किसी भी कोने में आप जाइए वहां ये चैतन्य ज्ञान गंगाएं पतितों को पावन बनाने के कार्य में पुरुषार्थ कर रही हैं। इस संस्था की बागडोर माताओं-बहनों के हाथ में है। इतना ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहे अन्याय, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, अश्लीलता, सम्बन्धों में हो रही गिरावट को रोकने और एक बेहतर, स्वर्णिम सृष्टि का सृजन करने में अपनी महती भूमिका निभा रही है। ये श्वेत वस्त्रधारिणी, राजयोगिनी, बाल ब्रह्मचारिणी, ब्रह्माकुमारियां सभी मनुष्य आत्माओं को सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान देकर स्वयं तथा परमात्मा के परिचय के साथ ईश्वरीय मिलन का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

परमात्मा ने ब्रह्मा को बनाया माध्यम

चूंकि परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता है। कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ, केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिन्ध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का बिल्कुल एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की ज़रूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। उस दौरान चूंकि परमात्मा को भारत और वन्दे मातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

कठिन तपस्या से विश्व-परिवर्तन की रखी नींव

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को और शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारम्भ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं और बहनें तथा कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

1950 में माउण्ट आबू में हुआ स्थानान्तरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू आई। माउण्ट आबू में से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में आध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ।

संस्था का फैलाव आज विश्व भर में

78 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। ब्रह्माकुमारीज़ के पूरे विश्व के 137 देशों में नौ हजार से भी ज्यादा सेवा केन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है। आज दुनिया भर से लोग परमात्मा के अवतरण में उनसे मिलन मनाने के लिए आते हैं।

परमात्मा शिव को मिलने यहाँ हज़ारों की संख्या में लोग आते हैं। वे आज भी दादी हृदयमोहिनी के माध्यम से लोगों को मिलते हैं। यहाँ सब वर्ग-समुदायों के लोग परमात्मा से मिलन मनाकर पवित्रता की उच्चतम स्थिति को प्राप्त करते हैं। स्वयं-भू आज माता-पिता के रूप में गुणों व शिक्षाओं से श्रृंगारित करते हैं। जिन्हें लोग ढूंढ़ रहे थे, आज वे उन आत्माओं की प्यास बुझा रहे हैं।

अमृतवेले बाबा सुनाता है मुरली

मेरे जीवन में इस ज्ञान से बहुत बदलाव आया है। पहले मैं अपसैट हो जाती थी परन्तु अब कैसी भी परिस्थिति हो मैं शान्ति महसूस करती हूँ। क्रोध पर मैंने 90 प्रतिशत काबू पा लिया है। जब मैं योग में बैठती हूँ तो मुझे बहुत अच्छे अनुभव होते हैं। कभी-कभी तो अमृतवेले मुझे मानो बाबा उसी दिन की मुरली सुना देता है। बाबा से पहली बार मिलने पर मैंने जब उनकी आंखें देखीं तो मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं उन्हें जन्म-जन्मांतर से देखती ही आ रही हूँ। मैं अब भगवान की बच्ची बन गई हूँ। मुझे लगता है मानो वो पल-पल साथ ही है।

-तेजश्री परवाल, ज्वेलर्स, जयपुर

परमात्म मिलन से रोम-रोम हुआ पुलकित

जब मेरा संस्था से परिचय हुआ तो मुझे बहुत उत्सुकता हुई कि परमात्मा का मनुष्य आत्माओं से मिलन, उनकी रूहानी दृष्टि, व मधुर बोल कैसे होंगे? मेरे जीवन का वह सुनहरा पल आया जब मैं नवम्बर 2010 आबू में अपने परमपिता परमात्मा शिव जो सर्व आत्माओं के पिता हैं, जिन्हें हम प्यार से शिव बाबा कहते हैं। उनके मिलन से, उनकी दृष्टि से रोम-रोम पुलकित हो गया। अन्दर से निश्चय हो गया कि जीवन को सही दिशा मिल गई। ऐसे परमात्म मिलन का सुख प्राप्त करने हेतु मैं हर वर्ष एक बार आबू अवश्य जाती हूँ। अपने को सौभाग्यशाली समझती हूँ।

-डॉ.सविता आनन्द, आई.एफ.एस, जयपुर (राज.)

यहाँ ईश्वर के पास बैठे होने की होती है अनुभूति

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा समग्र ज्ञान का प्रकाश जो सम्पूर्ण सृष्टि में विस्तारित होता है इससे सहज रूप से ये प्रतीत होता है कि वाकई ये संस्था ज्ञान का एक उत्कृष्ट केन्द्र है और स्वाभाविक रूप से इसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय कहा जाना उचित है। यह आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक ऐसा पाथेय है जिससे मनुष्य का नैतिक जीवन तो सुधरता ही है और साथ-साथ उसका अन्तर्मन भी निर्मल होता जाता है। इस संस्था में कदम रखने मात्र से ही मनुष्य के जीवन में कई सारे श्रेष्ठ बदलाव आ जाते हैं। इस संस्था में आकर परमात्म शक्ति का जिस तरह से अन्तर्बोध होता है तो यह अनुभव होता है कि यह ईश्वर की प्रत्यक्षता का ही प्रमाण है। जब भी मैं इसके सत्संग में बैठता हूं तो मुझे स्वत: अनुभूति होती है कि मैं ईश्वर के पास बैठा हूं और उनसे शक्तियां मिल रही हैं। **-मधुकर द्विवेदी,** वरिष्ठ पत्रकार, रायपुर

इस संस्था को चला रही अव्यक्त सत्ता परमात्मा शिव ही हैं

मैं 1974 में पत्रकारों और साहित्कारों की वर्कशॉप के अन्तर्गत इस संस्था के संपर्क में आया जहां हमारा राजयोग शिविर भी कराया गया। हमें जो ज्ञान दिया गया उस ज्ञान में मुझे बहुत तार्किकता और वैज्ञानिकता लगी। इसमें कोई भेदभाव, दिखावा, आडंबर जैसा कुछ भी नहीं था। और मुझे अनुभव हो रहा था कि ऐसा ज्ञान कोई सामान्य व्यक्ति नहीं दे सकता। जब मैं बाबा से मिला तो मुझे लगा कि कोई अव्यक्त सत्ता ज़रूर है जो इस माध्यम का उपयोग करके हमको ज्ञान दे रही है और वो सत्ता लोक-कल्याण और व्यक्ति कल्याण का ध्येय लेकर बात करती है तथा वो सत्ता हमारे पिता परमात्मा शिव ही हैं यह भी मुझे निश्चय हो गया। इस संस्था द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान इस रावण राज्य रूपी दुनिया को रामराज्य अर्थात् सतयुग, स्वर्ग में परिवर्तित करने के लिए है।

-प्रो. कमल दीक्षित, संपादक, राजी-खुशी पत्रिका, इंदौर।

ईश्वरीय सत्ता ही कर रही है यहाँ कार्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक अनोखा विश्वविद्यालय है जो अतुल्य है। मैं कई बार माउण्ट आबू गया हूँ परन्तु यहाँ के जो नियम हैं, ज्ञान है, योग की शिक्षा है, सहज धारणाएं हैं और सेवाभाव है, कहीं और नहीं देखा। छोटे से छोटे कार्यकर्ता से लेकर बड़ी दादियों तक को मैंने अपनी आंखों से देखा है पर ऐसा अनुशासन, स्वच्छता और सादगी कहीं नहीं है। इस विश्वविद्यालय को देखकर यह आभास होता है कि यह कार्य ईश्वरीय सत्ता के अलावा कोई नहीं कर सकता।

-श्री चंद्रशेखर स्वामी जी, हुक्केरी मठ - बेलगाम

बाबा मिलन पर हुआ दिव्य अनुभव

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई।

-रसिक पीठाधीश महंत जन्मजेयशरण, अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या

बाबा से मुलाकात जीवन के सबसे सुखदाई पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एकसाथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। साकार बाबा से मेरी 3 मुलाकातें हुई और वे मेरे जीवन के सबसे सुखदाई पल थे।

-डॉ.स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी

बाबा के सानिध्य में छोटे बच्चे जैसा अनुभव हुआ

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयान करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद में होता है। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं।

- महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति, अध्यक्ष षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार

माउण्ट आबू ही परमात्म मिलन की पवित्र भूमि

यहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है और देही-अभिमानी बनने का ज्ञान प्राप्त होता है। मैंने यह सीखा कि हम खुद को ही बदल सकते हैं, औरों को नहीं। पहले निश्चय नहीं था परन्तु जब मधुबन होकर आई तो धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा और यह पूर्णत: विश्वास हो गया कि हम आत्माएं हैं और सबका अपना-अपना पार्ट है। माउण्ट आबू आकर सच में ऐसा एहसास होता है कि हम स्वयं परमात्मा से मिल रहे हैं। मैंने दुनिया की तड़क-भड़क बहुत देखी है पर जो शान्ति बाबा के यहाँ आके मिली वो कहीं भी नहीं है। परमात्मा का ज्ञान मेरे लिए सुकून बनके आया और अब तो लगता है कि यही जीवन की प्राथमिकता है।

-दिव्या गोयल, जयपुर, गार्मेंट एक्स्पोर्टर एवं अंतर्राष्ट्रीय फैशन डिज़ाइनर

परमात्मा मिलने के बाद नज़रिये में आया बदलाव

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं बाबा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड,** सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली

मधुबन में बाबा मिलन पर मैं दूसरी दुनिया में पहुँच गया

यहाँ स्वयं परमात्मा शिव बाबा से योग लगाना शसिखाया जाता है जिससे मनुष्य का चारित्रिक विकास होता है। इस विश्वविद्यालय में परमात्मा खुद पढ़ाते हैं ब्रह्मा के तन का प्रयोग करके। एक से अधिक बार मैं खुद परमात्मा के रूबरू हुआ हूँ और अत्यंत शान्ति का अनुभव किया है। मन में कोई विकार न आए उसकी प्रेरणा मिलती रही। जब बाबा से मैं मधुबन में मिला तो मानो एकदम ही खो गया, जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गया हूँ। फिर जब मुरली खत्म हो गई तो मेरी युगल ने मुझे झकझोरा तब कहीं होश आया। यहाँ आकर मैंने यह सीखा है कि किसी की भी कमी-कमज़ोरी को चित्त पर नहीं रखना है। इससे यह फायदा है कि हम स्वयं भी विकृतियों से दूर रहेंगे।

-गोविंद वोरा, संपादक, अमृत संदेश, रायपुर

अव्यक्त बाबा से मिलन एक अनोखा अनुभव

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव इस विश्वविद्यालय में देखने को मिलता है। चाहे वह मुरलियों के माध्यम से हो, चाहे दादियों-दीदियों के माध्यम से हो, यहाँ जो वाणियाँ सुनने को मिलती हैं वे साक्षात् ईश्वर की ही लगती हैं। जो जीने का ढंग इस संस्था में बताया जाता है वह सब सम्प्रदायों से उठकर है और समाज के उत्थान के लिए है। अव्यक्त बाबा से मिलने पर भी मेरा अनोखा अनुभव रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि दादी नहीं, वहाँ ब्रह्मा बाबा ही बैठे हैं।

-जसवीर सिंह, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष।

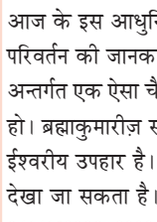

बाबा मुझे हर कदम पर गाइड करते हैं

परमात्मा हमारा पिता है, शिक्षक है, सद्गुरु है और खुदा दोस्त है, मुझे इन सभी रिश्तों का गहन अनुभव होता है। साकार में भी मैंने बाबा को देखा और अभी अव्यक्त में भी देख रहे हैं। हमें हर कदम पर गाइड करते हैं, संभालते हैं जैसे माँ-बाप संभालते हैं बच्चे को गिर जाने पर, ठीक वैसे ही। अगर कभी भी भटक जाएं तो उससे हमें टचिंग होती है कि बच्चे यह ठीक नहीं है। बाबा शिक्षक बनके हमें ज्ञान की पराकाष्ठा कराता है।

-ब्र.कु.सुषमा, क्षेत्रीय संचालिका जयपुर

परमात्म मिलन पर एक शक्ति मुझमें प्रवेश हुई

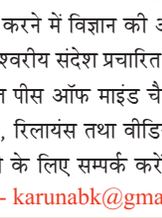

शास्त्र तो किसी व्यक्ति विशेष ने लिखे हैं। यहाँ भगवान खुद पढ़ाता है, नई-नई शिक्षाएं देता है। अगर समाज इस ज्ञान को पूरा उठा ले तो सुधार निश्चित है। पहली बार परमात्मा से मिलने पर लगा कि एक शक्ति मुझमें प्रवेश हो रही है। मैंने खुद को यज्ञ के प्रति समर्पित भी कर दिया है। ब्रह्माकुमारीज़ में जो ज्ञान दिया जा रहा है वो सर्वोत्तम है और इससे ही दुनिया में बदलाव आएगा। **-डॉ.गुप्ता,** जयपुर

बाबा की स्मृति रहती है सदा मेरे मन में

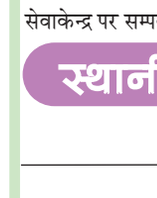

मैं 22 वर्षों से ज्ञान में हूं। यहाँ पर पवित्रता की शिक्षा दी जाती है। मेरे लिए यह सबसे महत्वपूर्ण विषय है जो और किसी भी विश्व विद्यालय या अन्य किसी भी संस्था में नहीं बताया जाता। यहाँ योग के द्वारा दिव्य दृष्टि दी जाती है जिसके द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कराया जाता है, यह दिव्य दर्शन है। नर से नारायण बनने की कला यहाँ ही सिखाई जाती है। बाबा की स्मृति मेरे मन के तार को हमेशा झंकृत करती रहती है। **-डॉ.अजय जैन,** फिज़ीशियन, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसिस, नई दिल्ली

पीस ऑफ माइंड चैनल - ईश्वरीय उपहार

आज के इस आधुनिक युग में परमात्म अवतरण व उनके द्वारा हो रहे विश्व परिवर्तन की जानकारी सभी को प्रदान करने में विज्ञान की अहम भूमिका के अन्तर्गत एक ऐसा चैनल जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित व प्रसारित होता हो। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा संचालित पीस ऑफ माइंड चैनल एक अमूल्य ईश्वरीय उपहार है। इसे केबल टी.वी., रिलायंस तथा वीडियोकॉन d2h पर देखा जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 9414153999, 83020222022, email - karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

इस वर्ष हम निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण की 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयंति मना रहे हैं। जहाँ एक ओर शिव परमात्मा अनेक आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करके दैवी-स्वराज्य की स्थापना का दिव्य कर्म कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस पुरानी पतित सृष्टि के विनाश के लिए आणविक अस्त्रों का जखीरा भी तैयार हो चुका है। साथ-साथ में प्राकृतिक आपदाएं भी उग्र रूप धारण कर रही हैं। तापमान में वृद्धि, भूकंप, मौसम में बदलाव इत्यादि प्राकृतिक असंतुलन भी ज़ोर पकड़ रहे हैं। यह पुरानी दुनिया के अंत का स्पष्ट संकेत है। अत: सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमंत्रण है कि वर्तमान संगमयुग में निराकार परमात्मा शिव व स्वयं को यथार्थ रीति से पहचानकर निकट भविष्य में आनेवाली नई दैवी-संस्कृति, सतोप्रधान दुनिया के अपने जन्मसिद्ध ईश्वरीय वर्से को प्राप्त करें। परमात्म ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने तमोगुणी संस्कारों का विनाश करें और दिव्य गुणों को धारण करें। इसकी अधिक जानकारी के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नज़दीकी सेवाकेन्द्र पर सम्पर्क करें।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:

____

____

____

ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन, जानकारी के लिए सम्पर्क करें: मो. 9414154344, 9414006096, 9414182088
email- mediabkm@gmail.com, bkdillip@gmail.com

सर्वत्र है उस नटराज शिव की महिमा

भगवान नटराज हैं, अर्थात् नट की तरह अपनी ऊँगली के ईशारे पर सभी को नचाने वाला। उस नटराज को सभी ने माना तो सही पर जाना नहीं। माना भी तो ऐसे, जैसा जिसने कहा ! आइये हम आपको परमात्मा के उन सभी दिव्य नामों से अवगत कराते हैं जिसे सुनकर आपके रोमांच खड़े हो जायें, कि क्या बात है? जिसे हम सुना-अनसुना कर देते थे, उन नामों के अर्थों में इतनी गुह्यता है !

ईसा मसीह ने परमात्मा को "दिव्य ज्योति" कहा

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा जेहोवा। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ट टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं। चर्च में जाएंगे तो वहां पर हमें मोमबत्तियां मिलती हैं। उसमें भी एक बड़ी मोमबत्ती होती है। बाकी सब छोटी मोमबत्तियां होती हैं। बड़ी मोमबत्ती परमात्मा का प्रतीक है। छोटी मोमबत्तियां आत्माओं का प्रतीक है।

"बालेश्वर" शिव को यहूदियों ने भी पूजा

थाइलैंड में भी एकोनिस और ऐस्टर्रिग्स नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलफेगो कहते हैं। ये लोग शिवलिंग की स्थापना करके बाल नाम से पूजते हैं।

भारत में भी शिवलिंग के अनेक मन्दिर बालेश्वर नाम से हैं। ये लोग बाल अथवा बालेश्वर की मूर्ति के सामने धूप-दीप आदि जगाते थे। यहां शपथ को नेम कहते हैं। ये शिवलिंग को सत्य स्वरूप परमात्मा की प्रतिमा मानने के कारण उसके सामने नेम अथवा शपथ लेते थे।

मिस्र ने भी स्वीकारा परमात्मा का अस्तित्व

मिस्र में शिवलिंग की पूजा आईसिस और ओसिरिस नाम से होती थी। ओसिरिस शब्द "ईश" शब्द से बना है। शिवलिंग की प्रतिमा के साथ वे बैल की मूर्ति रखा करते थे।

ईश्वर, भगवान या परमात्मा, शिव के पर्यायवाची नाम हैं। उनके गुणवाचक नामों में हमेशा ईश्वर या नाथ जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। परमात्मा शिव सब मनुष्य आत्माओं के मात-पिता हैं, उनका कोई माता-पिता नहीं है। वे देवों के भी देव महादेव, नटराज हैं। विश्व के विभिन्न धर्मसंस्थापकों एवं मनुष्य आत्माओं ने शिव की परम-सत्ता को अलग-अलग नामों से स्मरण किया है जो उनकी सार्वभौमिकता को सिद्ध करता है। जो सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वमान्य, सर्वशक्तिमान और सर्वोपरी है उसी को परमात्मा कहा जाता है। भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी सर्वत्र ज्योतिर्लिंगम के ही मंदिर पाए जाते हैं। भारत से बाहर नेपाल में पशुपतिनाथ, जापान, थाइलैंड, यूनान, मिस्र, बेबीलोन के अलावा अन्य देशों में भी परमात्मा की परिभाषा परम ज्योति, सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश के रूप में ही की गई है।

सभी महान् विभूतियों की स्मृति को बनाये रखने के लिए उनके स्मारक चिन्ह, मूर्तियां अथवा मंदिर आदि बनाये जाते हैं। परन्तु संसार में सब मूर्तियों में सर्वाधिक पूजा सम्भवतः शिवलिंग की ही होती है। विश्व में शायद ही कोई देश होगा जहाँ शिवलिंग की पूजा किसी भी रूप में न होती हो। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है-लक्षण। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ-ऐसा पिता जिसके लक्षण कल्याणकारी हों । प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाये जाते थे क्योंकिपरमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। यद्यपि आज ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे मतों के लोग शिवलिंग की उतनी और उस रीति से पूजा नहीं करते हैं जैसे कि हिन्दू करते हैं फिर भी ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान समय में भी विभिन्न धर्मों वाले लोग शिवलिंग को धार्मिक महत्व देते हैं।

शिव, श्रीराम के भी आराध्य

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए उस परम शक्ति परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। अतः सिद्ध है कि उन्होंने भी शिव की आराधना की थी।

मुस्लिमों के भी हैं नूर-ए-इलाही

भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता तो देते ही हैं परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग-ए-असवद कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम् कहा, ज्योति स्वरूप कहा। ज्योति माना ही तेज। इसलिए मुसलमान जब नमाज़ पढ़ते हैं तो मक्का की दिशा में नमाज़ पढ़ते हैं। जिसको भारत वर्ष में मक्केश्वर कहा जाता है अर्थात् मुसलमानों के अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर के निराकार को ही याद किया।

यूनान में भी होती है शिव की पूजा

यूनान में जाएंगे तो शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित है। यहां शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति स्थापित किया करते थे। बैल को सभी देशों में धर्म का सूचक माना जाता है। चूंकि शिव सत्धर्म की स्थापना करते हैं, इसलिए उनका वाहन बैल दिखाया जाता है। यूनान में शिवलिंग को फल्लुस के नाम से याद करते थे क्योंकि वह तुरन्त फल देने वाले परमात्मा की प्रतिमा है।

पारसियों में भी ज्योति स्वरूप परमात्मा की मान्यता

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखण्ड है, परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। तो इस धर्म में ज्योति स्वरूप पिता परमात्मा की ही मान्यता है।

शंकर भी लगाते हैं शिव का ध्यान

तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर का अपना-अपना अस्तित्व है और परमात्मा शिव जो इन तीनों के रचयिता हैं, उनकी सत्ता इनसे भिन्न है। प्रायः लोग शिव एवं शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम समझते हैं परन्तु शिव और शंकर वास्तव में एक नहीं हैं। शंकर एक सूक्ष्माकारी रूप वाले देवता है परन्तु शिव निराकारी हैं। शिव कल्याणकारी परम पिता परमात्मा का नाम है और शंकर आकारी देवता हैं जो कि तमोगुणी, आसुरी सृष्टि का विनाश करवाने के निमित्त हैं। कई चित्रों में शंकर और पार्वती को शिवलिंग के सम्मुख बैठा दिखाया गया है जिसमें शंकर, शिवलिंग की ओर संकेत करते हुए पार्वती को भी प्रेरित करते हैं कि वह अपनी योग साधना में शिव का मनन करें। इससे भी शिव एवं शंकर का भेद स्पष्ट प्रतीत हो जाता है। हम देखते हैं कि शंकर हमेशा ध्यान की अवस्था में बैठे होते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमपिता परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें शंकर बैठकर निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं। शिव ही सबके आराध्य परमपिता हैं ।

जापान में चिंकोनसेंकी का स्मरण

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है चिंकोनसेकी।

चिंकोनसेकी का अर्थ है, जो शान्ति का दाता है, जिसका ध्यान लगाने से शान्ति प्राप्त होती है। वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। फ्रांस में गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं। स्पष्ट है कि ये सभी नाम और सेवाजिया नाम शिव से या शिवजी से बने हैं।

इक ओंकार, सत्नाम

सिखों के धर्म-स्थापक गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम है जिसको काल भी नहीं खा सकता। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

गिरिजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

कहीं समय न बीत जाये

वर्तमान समय की हालत को देखें तो यह शिव परमात्मा के आने का अनुकूल समय है और वह आकर अपना कार्य भी कर रहे हैं। कहीं यह सुअवसर हमारे हाथ से निकल न जाए। हमें इस परिवर्तन की वेला में स्वयं का परिवर्तन कर अपना भाग्य जगाना है। मनुष्य की वास्तविक उन्नति उसे कल्याण की क्रियात्मक प्राप्ति एवं आनंद की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने से ही प्राप्त होती है। अतः हे मनुष्य, थोथी विद्वता की बातों को छोड़कर अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचते हुए तू ज्योतिर्बिन्दु शिव से योग लगा।

हाँ, शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए ...

मनुस्मृति में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ।

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। (ये वाक्या शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है) शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रची। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की ।

शिवरात्रि समस्त आत्माओं का त्योहार

इस पौराणिक उल्लेख का भी यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के ललाट में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दुःख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया। यदि सभी शिवरात्रि के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों को पूर्ण रूप से समझ जायें तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। शिवरात्रि सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है, लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्व आत्माओं के लिए ही है।

एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में

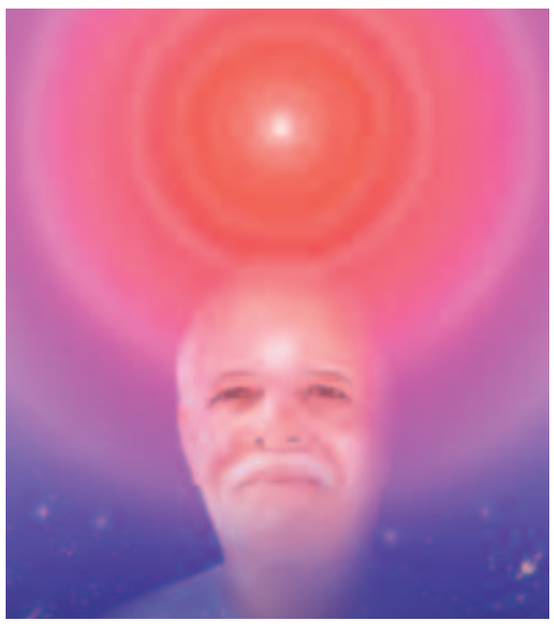

धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ ।

इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। कहीं उसकी व्याख्या अण्डाकार ज्योति के रूप में, तो कहीं सूर्य से भी प्रकाशमान ज्योति के रूप में की गई है।

परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनो

हे मनुष्य आत्माओं। अब समय आ चुका है विषय-विकारों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाने का। अभी नहीं तो कभी नहीं। ऐसा न हो परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाए और हम देखते ही रह जाएं। समय निकल जाने पर हमारे पास पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं रह जाता है। यदि हमें अपने भाग्य को जगाना है और नई सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना के इस कार्य में सहयोगी बनना है, तो परमात्मा शिव के इस महान कार्य में सहयोगी बनना है। परमात्मा शिव के इस महान कार्य में अपना तन-मन-धन सफल कर 21 जन्मों की बादशाही के मालिक बनने का सुअवसर हमारे सामने है।

ज्योति ने प्रकट होकर किया नवयुग का निर्माण

महाभारत में भी लिखा है कि जब यह सृष्टि तमोगुण और अन्धकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

जेहोवा शिव का ही पर्यायवाची

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रन्थों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरम्भ भी ऐसे ही होता है। सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने ही आदम एवं हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम जेहोवा मानते हैं जो परमात्मा शिव का ही पर्यायवाची है।

श्रीकृष्ण ने भी किया शिव का पूजन

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिमान्, गुणों के भण्डार, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं ।

देवी-देवता अनेक, परमात्मा हैं एक

शिव किसी एक धर्म या सम्प्रदाय के पूज्य देव नहीं हैं। बल्कि ये सभी अमर आत्माओं के परमपिता - 'अमरनाथ' हैं। आज भारत में देखा जाए तो देवताओं की पूजा क्षेत्रिय स्तर पर हो गई है, अर्थात् नॉर्थ की तरफ जाएंगे तो श्रीराम, श्री कृष्ण की पूजा मिलेगी। दक्षिण की ओर श्री वेंकटेश्वर या श्री बालाजी अर्थात् विष्णु की पूजा होती है। ईस्ट में काली पूजा, दुर्गा पूजा मिलेगी। वेस्ट में गुजरात एवं महाराष्ट्र की ओर श्री गणेश की पूजा मिलेगी। अर्थात् देवताओं की पूजा क्षेत्रिय स्तर की हो गई, लेकिन शिव की पूजा सारे भारत में होती है।

शिव ही नाथ-शिव ही ईश्वर

आज कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर जानना हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। जैसे परमपिता परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम क्यों कहा गया? क्योंकि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप निराकार है जिनका अपना कोई शरीर नहीं है तथा जो सदा ज्योति के समान प्रकाशमान है। परमात्मा को ज्योति स्वरूप का एक लिंग रूप बनाकर मनुष्य के सामने रखा गया ताकि मनुष्य अपनी भावनाएं अर्पित कर सकें, पूजा कर सकें। भारत में भी मन्दिरों के नाम के पीछे भी नाथ या ईश्वर शब्द जुड़ा है क्योंकि वो सर्व का नाथ, सर्व का ईश्वर है। जैसे नाथ के रूप में मान्यता है, भोलेनाथ, बबूलनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, अमरनाथ आदि। ईश्वर के रूप में गोपेश्वर, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, रामेश्वर, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर आदि।

परमात्म मिलन की कहानी-महानुभावों की जुबानी

आज कलियुग में जहाँ एक ओर समाज में भ्रष्टाचार और कुरीतियों का बोलबाला है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान भी अपने चरम पर पहुँच चुका है। ऐसे में एक तरफ लोग परमात्मा के अस्तित्व को भी नकारने लगे हैं, तो दूसरी तरफ लोग उसे सच्चे हृदय से पुकार भी रहे हैं। गीता में भी भगवान ने कहा है कि हे अर्जुन! जब मैं इस सृष्टि पर अवतरित होता हूँ तो मुझे कोटों में कोई और कोई में भी कोई ही जान पाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आज वही आत्मा-परमात्मा के मिलन का वही महाकुंभ और स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना का कार्य चल रहा है। परमात्म मिलन की शैली अपने आप में अलग और दिव्य है। कुछ व्यक्ति विशेष के परमात्म मिलन के अनुभव, उन्हीं के मुखार्विन्द से...

माउण्ट आबू में स्वर्ग सा अनुभव, साक्षात् भगवान से मिलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में शान्ति व सद्भाव का संदेश दिया जाता है। माउण्ट आबू में आने पर मुझे स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। हम साक्षात भगवान से मिले, उन्होंने हमसे बात की। पैसों से मखमल के गद्दे तो खरीदे जा सकते हैं, बढ़िया बिस्तर भी लिए जा सकते हैं परन्तु गहरी नींद आध्यात्म से ही प्राप्त हो सकती है। यह संस्था सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होने के कारण, आध्यात्मिकता चारों ओर फैल रही है जो कि समाज के लिए ऑक्सीज़न का काम कर रही है।

- महामण्डलेश्वर श्री जनारदन महाराज सतपंत, फैजपुर।

साकार बाबा से मिलने पर स्वयं भगवान से वार्तालाप की भासना

यह ब्रह्मा बाबा द्वारा अनुसंधान किया हुआ मानव कल्याण हेतु ज्ञान है - जिससे लोगों में अच्छे संस्कार ग्रहण करने की इच्छा पैदा होती है, जिससे वे सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित होते हैं। यह ज्ञान ईश्वरीय शिक्षा का है, अलौकिक व पारलौकिक शक्तियों का है।

यह ज्ञान ब्रह्मा बाबा की तपस्या के द्वारा जन-जन तक पहुँचा। साकार बाबा से मिलने पर मुझे स्वयं भगवान से वार्तालाप करने की भासना आई।

-करुणाकरण भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि विहार, ऑल इंडिया कमिटि

परमात्मा से मिलते ही मैं दूसरी दुनिया में पहुँच गया

सभी को ईश्वरीय शिक्षाओं व शक्तियों से अवगत कराने का कार्य वर्षों से ये संस्था करती आ रही है इसलिए इसे ईश्वरीय विश्वविद्यालय कहा जाता है। मैं जब पहली बार परमात्मा से मिला तो मैं उन्हें देखकर बिल्कुल ही भाव-विभोर हो गया और मुझे ऐसा लगा कि मैं इस दुनिया में ही नहीं हूं, मैं किसी दूसरे लोक की सैर कर रहा हूं। कुछ समय के लिए मैं अपने गांव, मठ तथा सभी सांसारिक बातों को भूल गया था। मैं माउण्ट आबू बार-बार आना चाहता हूं। वहां का वातावरण बहुत अच्छा है और उनका अतिथियों के आदर-सत्कार करने का तरीका सभी को सीखने लायक है। **-सिद्धेश्वर स्वामी जी,** नागनूर बेलगाम।

परमपिता के ज्ञान से ही सुंदर भविष्य आएगा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूं, मेरा कर्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है? मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा।

-शास्त्री कपिल जीवनदास, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री स्वामी नारायण गुरुकुल।

"आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं, लेकिन खुदा के नूर से, आदम जुदा नहीं"

मैंने महसूस किया कि साकार ब्रह्मा के तन में ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा, आदम की आत्मा के साथ विराजमान थे। उस दिन से मैंने ईश्वरीय जीवन को दृढ़ता से अपनाया और यह निश्चय किया कि समस्त जीवन बापदादा की श्रीमत पर चलकर ईश्वरीय सेवा में लगाऊँगा। ऐसा अनुभव और संस्कारों में परिवर्तन करना किसी साधारण व्यक्ति का काम नहीं था। यह तो उसी साधारण मानवी तन में अवतरित परमपिता परमात्मा का ही कार्य था। मैं जब पिताश्री जी के सम्मुख जाता था, मुझे वही ज्योति उनके मस्तक पर नज़र आती थी और उनके नयन-मुलाकात करते ही अपरम-अपार अलौकिक आनंद का अनुभव होता था। इतना मीठा, इतना प्यारा था शिवबाबा।

-ब्र.कु.निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

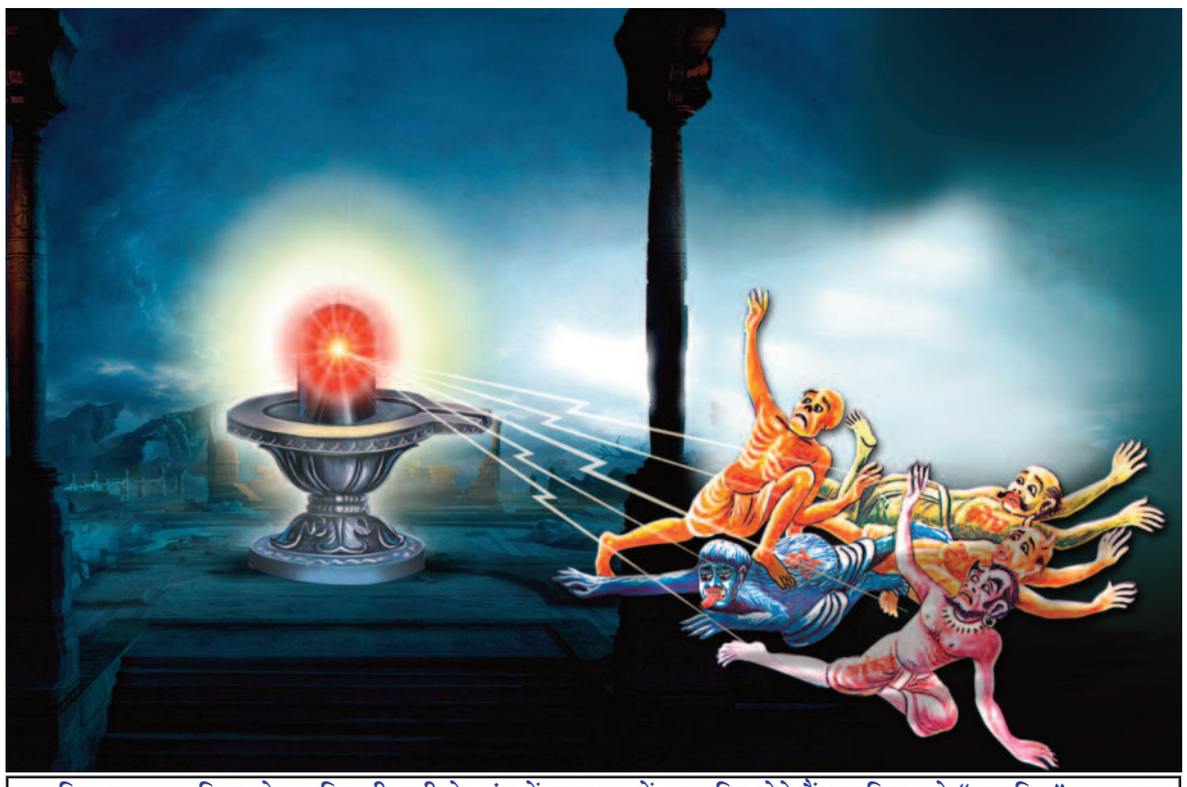

परमपिता परमात्मा शिव घोर कलियुगी रात्री के अंत में ब्रह्मा तन में अवतरित होते हैं, इसलिए उसे "जन्मदिन" न कहकर महाशिवरात्रि कहा जाता है। अभी वह समय चल रहा है और परमात्मा 5 विकारों - काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार - रूपी अंधियारे को भस्म कर नव सृष्टि रचने का कार्य कर रहे हैं।

साकार बाबा से प्रथम मिलन की अनुभूति

सन 1962 में जब दीदी चन्द्रमणि जी अमृतसर की पार्टी को बाबा से मिलाने मधुबन ले गई थी तो मैं भी उसमें शामिल थी। मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अंदर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे भाव-विभोर कर दिया। बाबा ने मेरे दिल को द्रवीभूत करने वाला अलौकिक प्यार दिया तथा वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्द ही अपने कर्मबन्धनों को काटा है - ऐसे कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की।

-ब्र.कु.राज, नेपाल

मैं बाबा के निमंत्रण पर ही मधुबन गई थी

जब मैं मुम्बई में ज्ञान में आई थी तो बाबा को पत्र लिखा था कि मैं आपसे मिलना चहती हूँ। बाबा ने तुरन्त मुझे पत्र लिखा कि बच्ची बाबा के पास बहुत संतोष हैं, बाबा भी देखना चाहता है कि यह कौनसी संतोष है। तुरन्त आ जाओ बाबा के पास। शुरू-शुरू में बाबा किसी बच्चे को जब पहली बार मिलते थे तब गोद लेते थे। जब मेरी बारी आई तो मैं खड़ी हो गई। बाबा मुझे कहने लगे कि जब बच्चे मुझसे मिलने आते हैं तो मैं भी परमधाम से इस तन में आता हूँ। ये बोल मुझको पक्के हो गए कि ब्रह्मा बाबा नहीं परन्तु स्वयं परमात्मा शिव बाबा बोल रहे हैं। मधुबन पहुँचने पर बाबा ने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं एक पल में सारी दुनिया भूल गई। **-ब्र.कु.संतोष,** महाराष्ट्र ज़ोनल इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज़

हर श्वांस में बाबा बसा है

परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल माँ-बाप समान की है। बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल माँ-बाप जैसी पालना की। मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहता है। हमारे हर श्वांस में बाबा बसा है। शिव बाबा ने हमें अपना बना लिया और आज अपने सेवा का महान कार्य करा रहा है। परमात्मा के साथ हमारा पूरा जीवन सफल हो गया। मनुष्य आत्माएं सभी परमात्मा के बच्चे हैं और सभी को आकर अपना वर्सा लेना चाहिए। समय बहुत तेज़ी से बीत रहा है। समय निकल जाने के बाद तो कुछ नहीं बचेगा।

-राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

बाबा की पालना का रिटर्न देने का समय

पहली बार जैसे ही पिताश्री का दर्शन हुआ तो मुझ आत्मा में एक विशेष अलौकिक आनंद और आत्म-तृप्ति का भाव भर गया। मैंने बाबा को मन ही मन अपना आदर्श और गुरु मान लिया। हमारा पहला-पहला पाठ है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं परन्तु साथ-साथ परमात्मा निराकार होते हुए भी साकार में आकर हम बच्चों को पालना दे रहे हैं केवल इसी बात के लिए कि बच्चे किसी भी तरह निराकार से जुड़े रहें और भगवान को अपना साथी बनाएं। बाबा अभी हम बच्चों को पक्का करा रहे हैं कि बच्चे, आने वाले समय में आपको स्वयं परमपिता परमात्मा का साथी बनकर उनको प्रत्यक्ष करना है और वो दिन दूर नहीं जब हमें स्वयं परमात्मा का माध्यम बनकर सभी को उसकी अनुभूति करानी होगी। बाबा ने जो हम बच्चों को इतनी पालना दी है उसका रिटर्न देने का समय आ गया है।

-ब्र.कु.करुणा, ब्रह्माकुमारीज़ मल्टी मीडिया के अध्यक्ष, मा.आबू

सदा कम्बाइन्ड स्वरूप ही सामने रहता था

साकार बाबा के दिनों में मुझे तो सदा स्मृति में यही रहता था कि साकार बाबा के तन का आधार लेकर निराकार शिव परमात्मा सतयुगी दुनिया का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। सदा कम्बाइण्ड स्वरूप ही सामने रहता था। फिर भी प्रात: मुरली के समय जब बाबा सभी को दृष्टि देते थे तो उस समय बहुत ही शक्तिशाली अनुभव होता था। मुरली के बीच-बीच में कई बार ऐसा लगता था कि स्वयं निराकार सर्वशक्तिवान, पतित-पावन अपनी वाणी के माध्यम से हम बच्चों में शक्ति भर रहे हैं। बाबा बहुत ही दृढ़ एवं निर्भय थे। स्वभाव मधुर एवं सरल था, ऊँची हस्ती परन्तु असीम निर्मानता, अद्भुत परख शक्ति एवं निर्णय शक्ति। स्पष्ट परन्तु सरल, सदा निमित्त भाव बाबा में देखा। करावनहार शिव बाबा ही है, अत: ब्रह्मा बाबा सदा स्वयं को निमित्त करनहार ही समझते थे। उनके संग से उनके कुछेक गुण स्वत: ही स्वयं में भी अनुभव होने लगते थे। **-ब्र.कु.अमीरचंद,** क्षेत्रीय निदेशक पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, ब्रह्माकुमारीज़

देह का भान भूल आंतरिक खुशी से हुआ भरपूर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में दिया जाने वाला आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्यों का दिव्यीकरण करता है तथा आत्मा की शक्तियों का विकास करता है। जब मैं पहली बार अपने परमपिता परमात्मा से मिला तो मुझे अपने देह का भान नहीं रहा। मुझे ऐसी कशिश हुई कि परमात्मा से पवित्रता की लाईट निकल रही है और मुझे भी उस लाईट के द्वारा पवित्रता का अनुभव हो रहा है। मैं अपने-आपको बहुत हल्का महसूस कर रहा था। और मेरा मन बस शांति, प्रेम और खुशी से भर गया। परमात्मा जब आता है तो हमें अपनी आत्मिक शक्तियों का भान हो जाता है। उनके सानिध्य में आकर मैं वास्तविकता से रूबरू हुआ कि परमात्मा मेरा पिता है, मैं उनका बच्चा हूं। मन ही मन एक विचार स्फुरित हुआ, जैसे कि बस अब उनके प्यार में ही जीवन बिताना है। जबकि परमात्मा से मिलन दुनिया के लिए एक कल्पना है लेकिन मेरे लिए तो साक्षात परमात्मा के साथ का अनुभव बना रहता है।

-ब्र.कु.ओम प्रकाश, क्षेत्रीय निदेशक इंदौर, ब्रह्माकुमारीज़

कराया दिव्य साक्षात्कार कहा आओ बनायें नई दुनिया

दादा लेखराज को हुआ था नई दुनिया की स्थापना एवं कलियुग के विनाश का साक्षात्कार

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने परिचय दिया कि:-

निजानन्द् स्वरूपम् शिवोहम्,
शिवोहम्
आनन्द स्वरूपम् शिवोहम्,
शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम्
शिवोहम्

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

यहाँ आकर मेरा प्यार भगवान से और बढ़ गया

आध्यात्मिक ज्ञान में ही आत्मा का अध्ययन समाया हुआ है। आत्मा से सम्बन्धित कोई भी बात आध्यात्मिकता में आती है। जैसे आत्मा क्या है, कहां से आती है, क्यों है ये संसार में, आत्मा का महत्व क्या है, आत्मा का पिता कौन है? मुझे परमात्मा से प्यार हमेशा से ही था, लेकिन जब मैंने पहली बार ब्रह्मा बाबा को देखा तो मुझे लगा कि यही मेरे सच्चे पिता हैं और उनके द्वारा जब परमपिता शिव परमात्मा का ज्ञान मिला तो मुझे पता चला कि मेरा सच्चा पिता तो वो है। तब से मेरा प्यार परमात्मा के लिए और भी बढ़ गया। मनुष्य तो समझते हैं परमात्मा तो सजा देता है, भगवान से डरना चाहिए लेकिन अब हमें ये अनुभव हुआ कि भगवान से डरना नहीं बल्कि भगवान से प्यार करना चाहिए। जब मैंने पहली बार अव्यक्त बापदादा को देखा तो मुझे बाबा से शक्ति का अनुभव हुआ और महसूसता हुई कि ये परमात्मा ही बोल रहे हैं कोई मनुष्य आत्मा नहीं बोल रही है।

-ब्र.कु.शीलू, वरिष्ठ राजयोगा शिक्षिका, माउण्ट आबू

बाबा में भगवान की ही एक्टीविटी देखती थी

ब्रह्मा बाबा की चलन से हमें भगवान के चरित्र का अनुभव होता था। हर समय हमारा ध्यान बाबा के चेहरे पर, बाबा की दृष्टि पर और बाबा के बोल पर ही होता था कि भगवान क्या करते हैं और कैसे करते हैं। साकार बाबा को देखने का हमारा उद्देश्य यही होता था कि भगवान उस रथ द्वारा कैसे देखते हैं, कैसे बोलते हैं और कैसे बच्चों के साथ खेलपाल करते हैं। ब्रह्मा बाबा में शिव बाबा है, यह निश्चय करने के लिए हमें मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे आज लोग पूछते हैं कि ब्रह्मा बाबा में ही परमात्मा आता है, कैसे विश्वास करें? लेकिन कभी भी ऐसा प्रश्न हमें आया ही नहीं। हमें तो हर पल यही अनुभव होता था कि हम भगवान के साथ हैं और वह अपना कार्य कर रहा है और हमें भी वैसा ही करना है। बाबा की दृष्टि इतनी मीठी और प्यारी होती थी कि हमें साकार रूप में भी दिखाई पड़ती थी और महसूस भी होती थी। ज्ञान एक होते हुए भी बाबा हर आत्मा की योग्यता अनुसार ही धारणा बताते थे।

-दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं निराकार परमात्मा से मिल चुका हूँ

यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ जाति, धर्म, देश का कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ ही वह शिक्षा मिलती है जिससे हम स्वयं को और परमात्मा पिता को पहचान सकते हैं। यह और संस्थाओं से भिन्न है क्योंकि यहाँ सभी को उच्च संस्कार जागृत करने की शिक्षा मिलती है। मैं इस संस्था में आकर स्वयं निराकार परमात्मा से मिला, बात की। उस अनुभव को बयान करना भी मुश्किल है। किसी भी धर्मपिता, महान नेता ने विश्व की इतनी सेवा नहीं की है जितनी परमात्मा शिव के प्रवेश के पश्चात् ब्रह्मा बाबा ने की। **-वी.ईश्वरैया, पूर्व एक्टिंग चीफ जस्टिस,** आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

मधुबन का वातावरण एक "सुपरपावर" के कंट्रोल में

स्वयं परमात्मा का ज्ञान यहाँ से प्राप्त हो रहा है। यह शिक्षा सभी मज़हबों के लिए है। वाणी में मधुरता, कर्मों में पवित्रता लाने की यहाँ से शिक्षा मिलती है। शान्तिवन में आते ही सहज योग लग जाता है, कोई व्यर्थ विचार नहीं आते। मधुबन में जो कुछ हो रहा है वह साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं है। यहाँ के वातावरण को एक सुपरपावर कंट्रोल करती है। इस आध्यात्मिक ज्ञान की तो स्कूली बच्चों को भी सुविधा मिलनी चाहिए ताकि वे कुरीतियों से पहले ही बच जाएं। **-पूर्व जस्टिस एल.सी.भादू,** बिलासपुर हाई कोर्ट

परमात्मा शिव इस संस्था द्वारा बना रहे मनुष्य को देवता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, और विद्यालयों व संस्थाओं से अलग इसलिए है क्योंकि इसकी स्थापना स्वयं परमात्मा शिव ने की है। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य है मनुष्य को देवता बनाना। हमारे शास्त्रों, पुराणों में भी लिखा हुआ है कि भगवान एक साधारण तन में अवतरित होते हैं लेकिन जो सात्विक बुद्धि वाले लोग होते हैं वे उसको पहचान लेते हैं। परमात्मा से मिलने के बाद हमारा जीवन दिव्यता से भर जाता है, हमारे जीवन में आध्यात्मिक उन्नति आने लगती है और वो दिव्य शक्तियां प्राप्त होती हैं जिनका हम हर परिस्थितियों में उपयोग कर सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। **-धरमेश,** सिटिंग जज, राजकोट।

परमात्म मिलन पर व्यर्थ से मिला छुटकारा

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती है। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है।

-बी.डी. राठी, हाई कोर्ट जज, ग्वालियर